

अगले महीने अंतरिक्ष युद्धाभ्यास करने की भारत की योजना

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 जून।

भारत ने अगले महीने पहली बार 'अंतरिक्ष युद्धाभ्यास' करने की योजना बनाई है। इसका नाम रखा गया है 'इंडस्पेसएक्स'। भारत ने मार्च में एंटी-सेटेलाइट (ए-सैट) मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया था और हाल ही में 'ट्राई सर्विस डिफेंस स्पेस एजेंसी' की शुरुआत भी की है। जुलाई में अभी तिथि तय होनी बाकी है।

इस अभ्यास में सैन्य अधिकारी और वैज्ञानिक हिस्सा लेंगे। रक्षा मंत्रालय के एक आला अधिकारी के मुताबिक, 'अंतरिक्ष का सैन्यीकरण हो रहा है। साथ ही साथ प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। रक्षा मंत्रालय द्वारा जुलाई के अंतिम हफ्ते में आयोजित होने वाले अभ्यास का मुख्य उद्देश्य भारत द्वारा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक अंतरिक्ष व अंतरिक्ष-रोधी क्षमताओं का आकलन करना है। इससे हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का आकलन भी होगा।'

अधिकारियों के मुताबिक, 'भारत को स्पेस में विरोधियों पर निगरानी, संचार, मिसाइल की पूर्व चेतावनी और सटीक टारगेट लगाने जैसी चीजों की आवश्यकता है। इससे हमारे सशस्त्र बल की विश्वसनीयता बढ़ेगी और राष्ट्रीय सुरक्षा भी मजबूत होगी। ऐसे में 'इंडस्पेसएक्स' हमें अंतरिक्ष में रणनीतिक चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगा, जिन्हें संभालने की आवश्यकता है।'

चीन ने जनवरी 2007 में एक मौसम उपग्रह के खिलाफ ए-सैट मिसाइल का परीक्षण करने

के बाद, दोनों गतिज (प्रत्यक्ष चढ़ाई मिसाइलों, सह-कक्षीय

मार उपग्रहों) के साथ-साथ गैर-गतिज के रूप में अंतरिक्ष में सैन्य क्षमताओं को विकसित किया है। चीन ने अंतरिक्ष में अमेरिका के वर्चस्व को खतरे में डालने वाले अपने महत्वाकांक्षी कार्यक्रम (समंदर में एक जहाज से 7 सैटेलाइट छोड़ने) को तीन दिन पहले ही लांच किया है।

चीन के इन अभियानों के मद्देनजर भारत के लिए 'इंडस्पेसएक्स' कार्यक्रम को अहम माना जा रहा है। भारत लंबे समय से स्थाई और मजबूती से अंतरिक्ष कार्यक्रमों को अंजाम दे रहा है। इसके बावजूद वह चीन की संचार, नेविगेशन, पृथ्वी अवलोकन और अन्य उपग्रहों से मिलकर 100 से अधिक अंतरिक्ष यान मिशन की बराबरी नहीं कर पाया है। भारतीय सशस्त्र बल अब भी दो सैन्य उपग्रहों के अलावा, निगरानी, नेविगेशन और संचार उद्देश्यों के लिए बड़े पैमाने पर दोहरा उपयोग वाले रिमोट सेंसिंग उपग्रह का उपयोग करते हैं।

भारत ने हाल में अंतरिक्ष में सैन्य अभियान की पहल की, जब मिशन शक्ति के तहत पृथ्वी की कक्षा में 283 किमी. की ऊंचाई पर 740 किलोग्राम की माइक्रोसेट-आर उपग्रह को नष्ट करने के लिए 19-टन की इंटरसेप्टर मिसाइल (छएड) 27 मार्च को छोड़ा गया। डीआरडीओ के प्रमुख जी सतीश रेड्डी के मुताबिक, भारत काउंटर-स्पेस क्षमताओं को विकसित करने के लिए काम कर रहा है, मसलन, निर्देशित ऊर्जा हथियार, लेजर, ईएमपी आदि। नई डिफेंस स्पेस एजेंसी ने रक्षा इमेजरी प्रसंस्करण और विश्लेषण केंद्र (दिल्ली) और डिफेंस सैटेलाइट कंट्रोल सेंटर (भोपाल) को नया रूप देने का काम शुरू किया है। वायुसेना के दो आला अफसर इन विभागों के प्रमुख होंगे।